''भूख का असली चेहरा''

बीते सोमवार (11.01.2010) को इन्डियन इस्लामिक कल्चर सेंटर में लेखक देविन्दर शर्मा की पुस्तक ''**भूख का असली चेहरा**'' का विमोचन हुआ। जिसमें लेखक देविन्दर शर्मा, फिल्म निर्देशक महेश भट्ट, स्वामी अग्निवेश, पाकिस्तान से आये मौहम्मद तहसीन तथा साउथ एशियन डायलॉगस् ऑन इकोलोजिकल डैमोक्रेसी के विजय प्रताप समेत अन्य लोग मौजूद थे, इसे साउथ एशियन डॉयलॉग्स ऑन इकोलॉजिकल डेमोक्रेसी संस्था तथा फोरम फॉर बायोटेक्नोलॉजी एवं फूड सिक्योरिटी ने संयुक्त रूप से आयोजित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विजय प्रताप ने की। सभा में कंचन शर्मा का कहना था कि भारत में भुखमरी एक गंभीर समस्या के रूप में मौजूद है। हमने WTO की Workshop में भाग लिया। वहां हम लोगों का यही सवाल था कि आखिर भुखमरी का चेहरा किन लोगों के सामने रखा जाए।

आगे बोलते हुए उन्होंने कहा कि 1984 में जनसत्ता में महेश पाण्डे का एक लेख छपा जिसमें भोपाल गैस हादसे से जो घटना घटी उसकी सम्भावना उन्होंने पहले ही जता दी थी।
उन्होंने इस लेख में भुखमरी से सम्बन्धित अन्य आंकड़े दिये जो चौंकाने वाले थे। उन्होंने कहा कि देविन्दर शर्मा का बहुत अविस्मरणीय योगदान है जो उन्होंने इस तरह की पुस्तक को लिखा।

कार्यक्रम में देविन्दर शर्मा ने कहा कि पुस्तक का विमोचन हो रहा है और ये किसी भी लेखक के लिए खुशी के क्षण होते हैं जिसका उसे इंतजार होता है। देविन्दर शर्मा का कहना था कि पुस्तक में मैंने विश्व व्यापार संगठन के द्वारा शुरू की गई आदर्शवादी वृद्धि तथा चिरस्थायी विकास की कल्पना को अपने तरीके से लोगों के सामने रखने का प्रयास किया है। हमारी अर्थव्यवस्था के साथ–2 भूखमरी भी अपने पैर पसार रही है। सरकार द्वारा आंकड़े गिनाए जाते है Media भी बढ़ती G.D.P को इस तरह पेश करती है मानो अब गरीबी समाप्त हो गयी हो, अगर बात G.D.P की आती है तो मैं चाहूंगा कि G.D.P का सम्बन्ध भूखमरी से नही है। अगर G.D.P बढ़ती है तो इसका सीधा असर अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। उन्होंने आगे कहा कि हमारे देश में 2000 लाख भूखे हैं जो विश्व में सबसे बड़ी संख्या में से है। 8370 लोग तो 20 रू. से कम खर्च करते हैं और ये भी सच है कि 20 रू. से दो वक्त की भी रोटी मुश्किल है।

अक्सर ये बात कही जाती है कि अनाज की कमी है लेकिन ये विचित्र बात है कि हमारे पास अनाज की भरपूर मात्रा है। बस खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि हो रही है। अनाज का ढेर इतना है कि चांद को छुआ जा सकता है 4 हजार करोड़ रू. तो अनाज की देख–रेख में खर्च हो जाता है। मनमोहन सिंह कहते हैं कि बाजार खोलने से विदेशी निवेशक आकर्षित हों लेकिन अफसोस की बात है कि बिना राजनैतिक आर्थिक पद्धति समझे बिना भारत जैसा देश G.D.P के लक्ष्य को बढ़ाने में लगा है जो हमें सिर्फ भूखमरी की ओर ले जाता है।

सरकार के पास आई.टी सेक्टर को देने के लिए पैसा है लेकिन गरीबों को देने के लिए पैसा नहीं होता है। सोच बदलने की जरूरत है। हमें गरीबों को अनाजों के दाम गिराकर देने की जरूरत नहीं है बल्कि उन्हें लालटेन, प्रेशर कुकर, साईकिल जैसी वस्तु दीजिए जिससे उनका जीवन आसानी से कट सके लेकिन हमारी सोच यहीं आकर दम तोड़ देती है इसे Media, नेता राजनीतिक छालावा का नाम देते हैं। उदाहरण देते हुए कहा कि पाकिस्तान के पूर्व वित्त मंत्री से जब मैंने बात कि तो मेहबूब उल–हक का कहना था कि 1970 में हमने G.D.P को 7 प्रतिशत तक बढ़ाया लेकिन हमें तब वोट नहीं मिले। हम चुनाव हार गये और मुझे इस बात ने झकझोर दिया। मैंने महसूस किया कि आर्थिक वृद्धि मानवीय विकास की सूचक नहीं है। पाकिस्तन से मोहम्मद तहसीन का कहना था कि मुझे इस कार्यक्रम में शामिल होकर खुशी हो रही है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के हालात तो और भी खराब हैं। पाकिस्तान में 80 प्रतिशत जमीन है जिसमें 8 प्रतिशत घराने ऐसे हैं जिनके पास जमीन है और एक सबसे बड़ी आश्चर्य और शर्मनाक बात भी है कि अभी तक हमारे पास कोई आंकड़े नही है जिससे हम गरीब, भूखे किसी को रेखांकिंत कर सके। और जो आंकड़े हैं वो घुमावदार और धोखे में रखने वाले हैं। हमारे पंजाब वाले इलाके में मुख्यमंत्री जाते हैं तब उन्हें पता चलता है कि किसानों को गेंहू पैदा करने के लिए किन–किन चीजों की जरूरत है।

उन्होंने आगे कहा कि गांधी जी सही कहा करते थे कि हमें गांव बसाने की जरूरत है शहरों में क्या रखा है। स्वामी अग्निवेश का कहना था कि हमारे देश में रोज 40 हजार बच्चों की मौत होती है। 9/11 जैसे हमलों में लोगों की संख्या 34 सौ थी जो एक बार ही मर गये थे लेकिन ये बच्चे तिन–तिन की मौंत मरते हैं। इसमें हमारे व्यवस्था की नाकामी है हर राज्य को भूखमरी जैसे गम्भीरतम समस्या में जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

कोपेनहेगन जैसे सम्मेलन में इस तरह के मसले नही उठाए जाते हैं आर. के. पचौरी का कहना है कि मीथेन गैस कार्बन से 23 प्रतिशत ज्यादा खतरनाक है। इन सब का एक कारण है हम अपने जीवन शैली में बदलाव नहीं करना चाहते हैं। अमीर और अमीर होता जा रहा है गरीब और गरीब। कार्यक्रम में महेश भट्ट का कहना था कि देविन्दर शर्मा ने जो आईना/दपर्ण दिखाया है वो एक कड़वी सच्चाई है। हम फिल्में बनाते हैं लेकिन उसमें सच कम और कल्पना अधिक ही होता है। हम फिल्मों के नाम पर जनता के सामने झूठ को परोसते हैं। हम सच्चाई का सामना नहीं करना जानते हैं हमारे नेता हमें विकास की राह पर न ले जाकर विकास न होने के डर से दिखावा करते हैं पुस्तक ताकतवर है उस दपर्ण की तरह जिसमें हम अपनी सच्चाई देख सकते हैं।